बच्चों के साथ पुस्तकालय पर काम करने के कुछ अनुभव

वृजेश सिंह

विद्यालय में एक अच्छा पुस्तकालय होने के बावजूद बच्चों के बीच उसका उपयोग न होना आज भी स्कूलों की एक बड़ी समस्या है। यह लेख स्कूल में, बच्चों का पुस्तकालय की किताबों से जुड़ाव बनाने के लिए किए गए प्रयासों का विवरण प्रस्तुत करता है। इस विवरण में उन किताबों का ज़िक्र है, जिनमें दर्ज विचारों का सहारा लेकर लेखक ने बच्चों के साथ काम किया है। लेख में रीड अलाउड, पुस्तकालय से परिचय, कविता-कहानियाँ सुनाना, कविताओं के पोस्टर पर बातचीत और बुक टॉक जैसी गतिविधियों के अनुभव भी शामिल हैं। इन गतिविधियों से बच्चों का जुड़ाव पुस्तकालय से बनाया जा सकता है व उनमें धीरे-धीरे पढ़ने की आदत विकसित की जा सकती है। -सं.

हमें जिस बात का डर है और शोध जिस तरफ़ संकेत करते हैं, वह यह है कि हम ऐसे 'स्कूली पाठक' बना रहे हैं जो कक्षा छोड़ने के बाद शायद ही कभी किताब पढ़ते हैं।

यह पंक्तियाँ एलिन ओलिवर कीने और सुसान ज़िमरमैन (Ellin Oliver Keene and Susan Zimmermann) की पुस्तक *मोज़ेक ऑफ़ थॉट* (Mosaic of Thought) से हैं। यह पुस्तक समझ के साथ पढ़ना सिखाने की रणनीतियों के बारे में है। इन पंक्तियों को पढ़ने के दौरान, मैं सिरोही के आदिवासी अंचल में भाषा शिक्षण व पुस्तकालय के माध्यम से बच्चों को समझ के साथ पढ़ना सिखाने और स्वतंत्र पाठक बनाने के स्वप्न को साकार करने के लिए काम कर रहा था। मेरी दिनचर्या में, स्कूलों में भाषा कालांश और पुस्तकालय कालांश का अवलोकन करना शामिल था। अवलोकन के लिए जिस स्कूल को मैंने चुना, वहाँ पुस्तकालय था, लेकिन वहाँ जाने पर पाया कि उसका उपयोग नहीं हो रहा है, और पुस्तकालय कालांश जैसा कोई विचार ही नहीं है। इसलिए तय किया गया कि शिक्षकों से इस बारे में बात करनी होगी।

सबसे पहले, पुस्तकालय की किताबों के उपयोग को लेकर शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के प्रयास में 'पाठ्यपुस्तकें बनाम पुस्तकालय की किताबों' का यक्ष प्रश्न मेरे सामने था। मैंने एक शिक्षक साथी से सुना था– "आधे से ज़्यादा पाठ्यक्रम बाक़ी है, और आप चाहते हैं कि मैं बच्चों को कहानी की किताबें पढ़कर सुनाऊँ।" उनकी बात बहुत स्वाभाविक लगी। इसके बाद, शिक्षकों के साथ पुस्तकालय की ज़रूरत पर बात हुई। शिक्षकों के द्वारा पुस्तकालय को स्कूल और कक्षा से अलग देखने की वास्तविक स्थिति का अहसास भी उनके अनुभवों पर चिन्तन करने और उनके साथ संवाद की प्रक्रिया में गहराई के साथ हुआ। इस संवाद में, शिक्षकों ने कहा कि वे जानते हैं, पुस्तकालय ज़रूरी है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षणों में उन्हें यह बताया गया है कि पढ़ना-लिखना सीखना विषयों को सीखने की बुनियाद है, और पुस्तकालय इसमें

मददगार है। उनके कई साथी, जो बच्चों के साथ पुस्तकालय और पढ़ने-लिखने पर काम कर रहे हैं, पढ़ने-लिखने में पुस्तकालय की महत्ता को रेखांकित करते हैं। लेकिन तब भी, शिक्षक स्कूल में बच्चों का पुस्तकालय जाना और उनका वहाँ पढ़ना सुनिश्चित नहीं कर पाते। अत: हमने मिलकर इस काम को करने का निश्चय किया।

इस काम की शुरुआत हुई, प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ रीड अलाउड वाले सत्रों से। इन सत्रों में, बच्चे किसी कहानी के मुख्य पृष्ठ पर चर्चा करते; अनुमान वाले प्रश्नों पर विचार करते और जवाब देते; कहानी सुनने के दौरान बीच-बीच में कहानी को लेकर अनुमान लगाते कि कहानी किस दिशा में आगे बढ़ेगी, और आगे क्या होगा; कहानी पूरी होने के बाद अपनी पसन्द के पात्रों, कहानी की कोई पंक्ति, किसी शब्द, या कहानी की किसी परिस्थिति पर अपने विचार व अनुभव साझा करते। इस काम को करने में, निश्चित तौर पर प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार की किताब *बच्चे की भाषा और अध्यापक* से बहुत मदद मिली। इस किताब के पन्नों को *बरखा* सीरीज़ और पुस्तकालय की किताबों के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों में जीवन्त होते देखने का अवसर मुझे मिला।

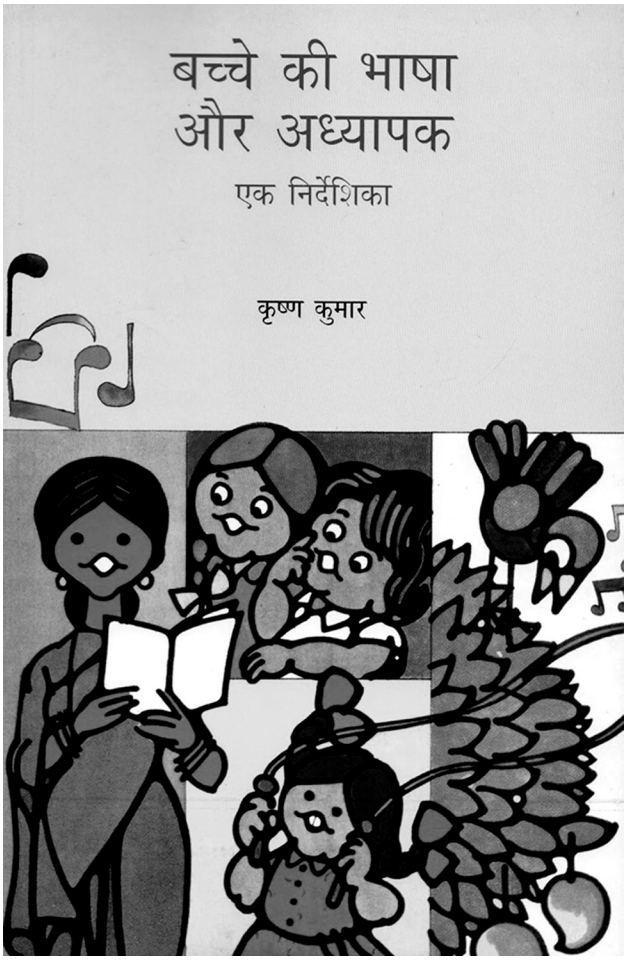

पुस्तकालय से बच्चों को परिचित कराने का एक तरीक़ा बच्चों को किताबों के बीच स्वतंत्र छोड़ देना, उन्हें विभिन्न किताबों को उलट-पलटकर देखने और अपने दोस्तों के साथ उनपर बातचीत करने के अवसर देना भी है। इस बात को एक तकनीक के रूप में लाइब्रेरी इमर्ज़न या पुस्तकालय से परिचय की गतिविधि भी कह सकते हैं। ऐसे ही एक अनुभव के दौरान, पहली कक्षा के बच्चों ने पुस्तकालय की किताबों को देखा। इस दौरान कुछ बच्चों ने किताबें उलटी पकड़ी हुई थीं। लेकिन जब उन्होंने साथ बैठे बाक़ी बच्चों को ख़ास तरीक़े से किताबें पकड़े देखा, उन्होंने भी अपनी किताब को ख़ुद ही सीधा कर लिया। कुछ बच्चों ने किताब में ऑटो का चित्र देखा। वे मुझे बताना चाहते थे कि हमारे गाँव से भी ऑटो क़स्बे के लिए जाते हैं। इसके बाद उन्होंने किताब के भीतर के पन्नों की सामग्री, मुख्यतौर से चित्रों, पर अपने सहपाठियों के साथ बातचीत शुरू कर दी। इस प्रक्रिया में, मेरी भूमिका अवलोकन करने, ख़ुद भी कोई किताब लेकर देखने, और बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले सवालों या जिज्ञासा का समाधान करने की थी।

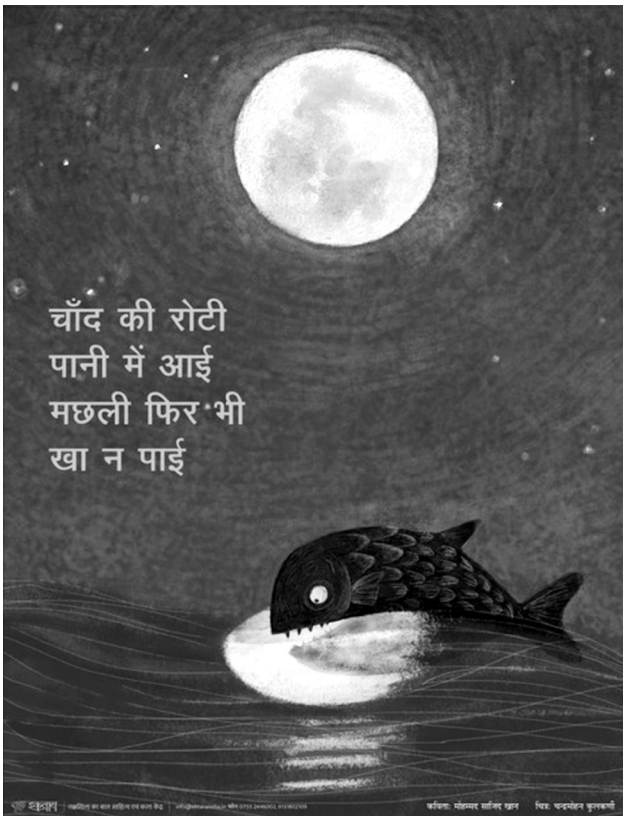

पुस्तकालय में नियमित जाने पर बच्चों के मन में पुस्तकालय के मायने भी बनने शुरू हुए। उनको पुस्तकालय में उस अनुशासन से आज़ादी मिली, जो आमतौर पर कक्षा में होता है। किताबों की श्रेणी या रंग के साथ-साथ उन्हें बड़ी किताबें देखने का भी अवसर मिला। इससे बच्चों में ख़ुद की पसन्द या चुनाव के प्रति सजगता वाला यह भाव भी आया कि अपनी किताब का चुनाव वे ही करेंगे। हाँ, इसके लिए वे किसी अन्य साथी या शिक्षक की मदद ले सकते हैं। बच्चों को ख़ुद की पसन्द के प्रति सजग बनाने, लम्बे समय तक अपनी पसन्द की किताबें पढ़ने, और उन किताबों के बारे में एक स्वतंत्र राय बनाने में भी पुस्तकालय मदद करता है।

इन प्रयासों के दौरान, मैंने समझा कि बच्चों को कहानी व कविताओं को सुनने का अवसर देना और उनके विचारों को अभिव्यक्त (चित्र बनाकर, लिखकर या बोलकर) करने के लिए अवसर देना बहुत ज़रूरी है। बच्चों के प्रयासों को बढ़ावा देने से पुस्तकालय से उनका जुड़ाव बनाने में काफ़ी मदद मिलती है। मैंने पाया है कि बच्चों में किताबों के प्रति रुझान बाल वाटिका या पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं से ही शुरू किया जा सकता है। मसलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों पर चित्र पुस्तकों, छोटी-छोटी कहानियों-कविताओं और चित्र पोस्टरों से काफ़ी मदद मिली। इकतारा द्वारा प्रकाशित एक चित्र पोस्टर में कविता की एक पंक्ति है– "चाँद की रोटी, पानी में आई, मछली फिर भी, खा न पाई"। बच्चों को ऐसी कविताओं-कहानियों के पोस्टर बहुत पसन्द आए। शायद इसलिए भी, क्योंकि चित्रों के साथ ये पोस्टर भाषा के रचनात्मक उपयोग की सम्भावनाओं से भी रूबरू कराते हैं। अच्छा चित्रांकन, कविताएँ और कहानियाँ बाल साहित्य के साथ बच्चों के जुड़ाव को कई गुना बढ़ा देने की सामर्थ्य रखती हैं। मिसाल के तौर पर, एक छोटी-सी कहानी है, *अच्छा मौसी अलविदा!* इस किताब के लेखक प्रभात हैं और चित्रांकन सुनीता का है। इस कहानी को सुनने के बाद बच्चे यह किताब लेकर गए। अलग-अलग बच्चों ने उसके चित्रों को देखा, और कहानी को दोबारा पढ़ा। इसी तरीक़े से एक और किताब है *खिचड़ी... एक लोककथा।* यह कहानी बच्चों को बहुत अच्छी लगती है, और वे इसे बार-बार सुनना पसन्द करते हैं। कुछ विद्यालयों में बच्चों ने इस कहानी पर रोल प्ले भी तैयार किए हैं।

बाल साहित्य के साथ बच्चों को जोड़ने के लिए पूर्व-प्राथमिक से लेकर आठवीं कक्षा तक सुगमता के साथ काम किया जा सकता है। मेरे अनुभव प्राथमिक से लेकर उच्च प्राथमिक

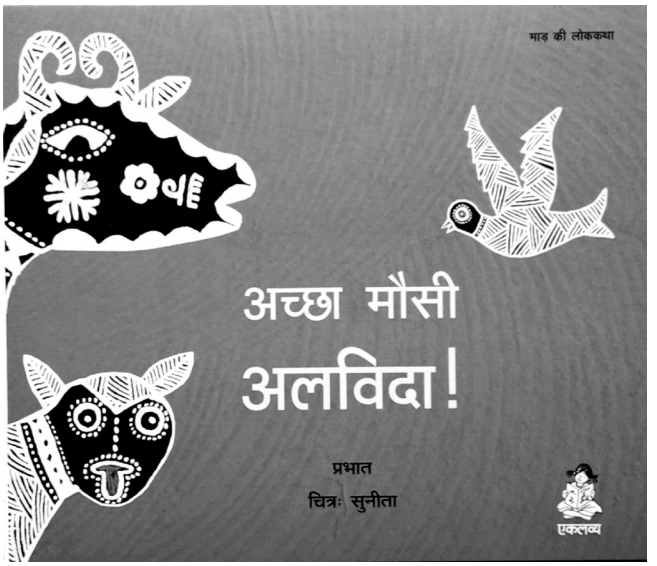

कक्षाओं, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, और 12वीं तक के विद्यालयों के रहे हैं। किताबों पर बच्चों के द्वारा चित्र बनाने, लिखकर विचारों को व्यक्त करने, बातचीत और चर्चा वाली गतिविधि में शामिल होने, रोल प्ले तैयार करने, और पाठक रंगमंच जैसी गतिविधि में शामिल होने से उनमें मौखिक भाषा का विकास बेहतर ढंग से होता है। इससे बच्चों के विचारों में स्पष्टता आती है और उनकी झिझक भी टूटती है, क्योंकि पुस्तकालय का स्वतंत्र और जीवन्त माहौल सभी बच्चों के लिए अवसरों की समानता और गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी की बुनियाद पर टिका होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, फाउंडेशनल स्टेज 2022 के अनुसार, "बच्चों की दुनिया के लिए कहानियाँ खिड़की की भाँति हैं। उनके लिए कहानियाँ सुनना एक बेहद आनन्ददायक अनुभव है। बच्चे किसी एक ही कहानी को बार-बार सुनना पसन्द करते हैं। इससे बच्चों में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता और एकाग्रता बढ़ती है। बच्चों को भी किताब से कहानी पढ़कर सुनाने का अवसर देना चाहिए। हाव-भाव और अच्छी तैयारी के साथ सुनाई गई कहानियों का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। नए शब्द सीखना, शब्द भण्डार, वाक्य संरचना की समझ, और समस्या समाधान के कौशल भी इस माध्यम से विकसित होते हैं। सामाजिक रिश्तों, भावनाओं को समझने व अभिव्यक्त करने, और जीवन कौशलों के विकास हेतु कहानियाँ सशक्त माध्यम हैं।" इस पूरी बात को कहानियों के साथ-साथ व्यापक अर्थों में बाल साहित्य के इस्तेमाल के अवसर, निरन्तरता और रणनीति के साथ काम करने के प्रभाव और फ़ायदों के रूप में भी देखा जा सकता है। इन फ़ायदों के बारे में महज़ बोलकर नहीं बताया जा सकता। वास्तव में, इनके प्रत्यक्ष अनुभव के लिए रीड अलाउड (कहानियों पर चर्चा करते हुए पढ़कर सुनाना), किताबों के बारे में संक्षेप में बताना (बुक टॉक), स्वतंत्र रूप से पढ़ने के अवसर देना और स्कूल पुस्तकालय के संग्रह से बच्चों को परिचित होने का अवसर देना काफ़ी उपयोगी होता है। इससे बच्चे कहानियों के प्रति आकर्षित होते हैं और धीरे-धीरे उन्हें पढ़ने की ओर अग्रसर होते हैं।

पुस्तकालय को जीवन्त और सक्रिय बनाने के लिए उसे देखने के नज़रिए के साथ-साथ, गतिविधियाँ करने के लिए शिक्षकों का प्रोफ़ेशनल विकास, विविधतापूर्ण संग्रह की मौजूदगी, और बच्चों की किताबों तक प्रत्यक्ष पहुँच जैसे बहुआयामी प्रयास ज़रूरी हैं। साथ ही, किताबों को पढ़ने के लिए विद्यालय में निर्धारित समय दिया जाना, और घर पर पढ़ने के लिए किताबों का लेन-देन, लेंडिंग कार्ड या रजिस्टर जिस भी माध्यम से सुगम बने, भी ज़रूरी है। बच्चों को ख़ुद के द्वारा पढ़ी गई किताबों के बारे में बताने का अवसर देने, और उनके बनाए चित्रों व काम का प्रदर्शन पुस्तकालय में करने से दूसरे बच्चे भी पुस्तकालय से जुड़ने और वहाँ की किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। बनाए गए चित्रों व काम के प्रदर्शन से बच्चों को

एक अलग पहचान मिलती है। इससे वे पुस्तकालय से जुड़ाव महसूस करते हैं। पुस्तकालय की गतिविधियों में विविधता के साथ-साथ उसकी निरन्तरता और नए संग्रह से बच्चों का परिचय कराना भी ज़रूरी है। पुस्तकालय को सन्दर्भ सामग्री वाली जगह के रूप में विकसित करना उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को पुस्तकालय से जोड़ने में मदद करता है। संग्रह की विविधता में इस पहलू का भी समावेश किया जा सकता है। पुस्तकालय से बच्चों को जोड़ने के क्रम में शिक्षकों का यह डर भी दूर हो जाता है कि बच्चे किताबें फाड़ देंगे, क्योंकि बच्चे किताबों को सँभालने की भी ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हैं। उदाहरण के लिए, लखनऊ के कुछ विद्यालयों में गर्मी की लम्बी छुट्टियों में बच्चों को घर पर और समुदाय में पढ़ने के लिए कुछ किताबें जारी की गई थीं। ग़ौर करने वाली बात यह है कि किसी भी विद्यालय से ऐसा सुनने को नहीं मिला कि किताबें खो गईं या बच्चों ने वापस नहीं लौटाईं। शिक्षकों का बच्चों के ऊपर ऐसा भरोसा करने का ये उदाहरण सम्पूर्ण भारत के शिक्षकों को भी प्रेरित करने वाला है।

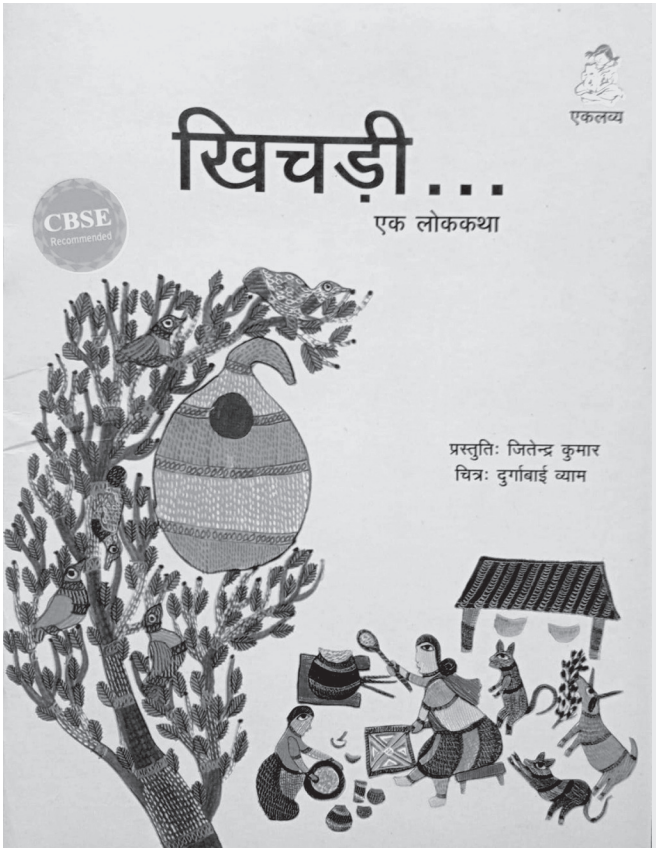

अन्त में, बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के सन्दर्भ में प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार अपनी पुस्तक *पढ़ना, ज़रा सोचना* में लिखते हैं, "पढ़ने का उद्देश्य उस आनन्द या सुख की तलाश है जो सिर्फ़ साहित्य दे सकता है। पढ़ने का सुख एक निरुद्देश्य सुख है। अर्थात, इसमें जो कुछ है, वह पढ़ने की आदत डालकर ही महसूस किया जा सकता है। पढ़ना मूलतः जिज्ञासा के सहारे आगे बढ़ने वाला काम है। पढ़ाई में निहित 'पढ़ना' इस बात से बिलकुल विपरीत है। पढ़ाई में मेहनत और परीक्षा की तैयारी हावी होती है।" बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना ज़रूरी है, ताकि वे बाल साहित्य के आनन्द या पढ़ने के सुख को महसूस कर सकें।

वृजेश सिंह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन के रूप में काम कर रहे हैं। इससे पूर्व आपने लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फ़ाउण्डेशन, रूम टू रीड इंडिया, टाटा ट्रस्ट्स, स्टार एजुकेशन जैसी संस्थाओं में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान, पुस्तकालय, शिक्षक अभिप्रेरण और शिक्षकों के क्षमतावर्धन हेतु ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के साथ काम किया है। विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के सहयोग से विभिन्न विचारों को क्रियान्वित करना और उन अनुभवों पर चिन्तन व लेखन आपके कार्य का अभिन्न हिस्सा रहा है। आप भाषा और पुस्तकालय के क्षेत्र में आदिवासी अंचल और ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने का सघन अनुभव रखते हैं। आपने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज से मास्टर ऑफ़ आर्ट्स (एलीमेंट्री एजुकेशन) की शिक्षा हासिल की है।

सम्पर्क : virjesh.singh@azimpremjifoundation.org